॥ श्रीगुरूचरणकमलेभ्यो नमः ॥

भागवत धर्म समाज

गौडीयवैष्णव व्रतोत्सव तिथिपत्रिका 2025-2026

संस्थापकाचार्य : **श्री अनन्त विभूषित जगद्गुरु श्री कृष्णचैतन्य माध्वगौड़ेश्वराचार्य**

श्रीपाद कृष्ण बलराम स्वामीजी महाराज प्रभुपाद

श्री श्री राधा गोविन्द मन्दिर, बुर्जा रोड, रमणरेती, वृन्दाबन, मथुरा-281121

Website : **www.krsna.org**

ज्योतिष की गणनानुसार प्रायः सभी मासिक तिथियों में घटावढी होती रहती है जिससे तिथियाँ एक दूसरे से मिश्रित हो जाती हैं इस कारण उपवासों में विद्धा संक्रमण हो जाता है। इस समस्या से बचने के लिये इस जन्त्री को बनाते समय काशी विश्वविद्यालय से प्रकाशित काशीविश्वपञ्चांग तथा अर्वाचीन व्यास महर्षि द्वारा प्रणीत पुराणों (हरिभक्तिविलास सम्मिलित) ग्रन्थों के आधार पर उपवास की तिथियाँ निर्णीत करके इस पत्र में सम्मिलित की गई हैं। अतः वैष्णव सिद्धान्तानुसार व्रत-उपवासों को करने की सही तिथियाँ इस पत्रिका में निर्धारित की गई हैं जिससे यह तिथिपत्रिका भगवदानुरागी भक्तों को उनके द्वारा किये गये उपवास तथा तपस्या आदि का पूर्ण रूप से फल प्राप्त कराने में सही सहायक हो यह हमारी हार्दिक अभिलाषा है।

वर्ष 2025

मार्च	30	रवि	नया सम्बत्, इस वर्ष का नाम सिद्धार्थ है और इस वर्ष का राजा सूर्य रहेगा।
अप्रैल	06	रवि	श्रीराम नवमी व्रतम् सर्वेषाम्, एकादशी की तरह से ही इस व्रत का उपवास करना होगा तथा दूसरे दिन सुबह इस व्रत का पारण होगा।
अप्रैल	08	मंगल	कामदा एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, दूसरे दिन सुबह व्रत का पारण।
अप्रैल	12	शनि	पूर्णिमा।
अप्रैल	24	गुरु	वरूथिनी एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, दूसरे दिन सुबह पारण।
अप्रैल	27	रवि	अमावस्या।
अप्रैल	30	बुध	अक्षयतृतीया, वृन्दावनस्थ लालपत्थर मन्दिर में भगवान श्रीश्रीराधागोविन्दजी के श्रीविग्रह की अष्टोत्तरशत (108) कलशों से एवं अनेकानेक औषधियों के साथ पञ्चामृत से महाभिषेक, तत्पश्चात् भगवान गोविन्द के श्रीविग्रह का मलयागिरि चन्दन द्वारा श्रृंगार।
मई	08	गुरु	मोहिनी एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, दूसरे दिन सुबह पारण।
मई	11	रवि	नृसिंहचतुर्दशी व्रत, एकादशी की तरह से ही इस व्रत का पालन, तथा दूसरे दिन पारण।
मई	12	सोम	वैसाखी पूर्णिमा।
मई	23	शुक्र	अपरा एकादशी व्रतम् सर्वेषाम, दूसरे दिन पारण।
मई	27	मंगल	अमावस्या।
जून	05	गुरु	गङ्गा दशहरा। गङ्गाजन्म दिन।
जून	07	शनि	भीमसेनी निर्जला एकादशी व्रतम् वैष्णवानाम्, दूसरे दिन पारण।
जून	11	बुध	पूर्णिमा।

जून	22	रवि	योगिनी एकादशी व्रतम् वैष्णवानाम्, दूसरे दिन पारण।
जून	25	बुध	अमावस्य।
जून	27	शुक्र	भगवान जगन्नाथजी की रथयात्रा पुरी। हमारे श्रीस्वामीजी (श्रीकृष्ण बलराम स्वामीजी) का प्रकट दिन (जन्म दिन)।
जुलाई	06	रवि	हरिशयनी (देवशयनी या पद्मा) एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, दूसरे दिन पारण तथा आज से अगले एक महिने तक सभी प्रकार की पत्तियोंवाली सब्जियो का त्याग करना आवश्यक।
जुलाई	10	गुरु	गुरुपूर्णिमा।
जुलाई	21	सोम	कामिका एकादशी व्रत, दूसरे दिन पारण।
जुलाई	24	गुरु	अमावस्या।
जुलाई	27	रवि	हरियाली तीज। इस दिन राधारानीजी ने भगवान श्रीकृष्ण के लिए मिठाई बनाई।
अगस्त	05	मंगल	पुत्रदा एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, दूसरे दिन पारण। इसदिन से भगवान श्रीश्रीराधागोविन्दजी की झूलनयात्रा होगी जो पूर्णिमा तक चलेगी। इसदिन के बाद से पत्तोंवाली सब्जी खाना शुरू और दही-छाछ का अगले तीस दिन तक त्याग। दूसरे दिन एकादशी का पारण।
अगस्त	09	शनि	पूर्णिमा। भगवान की झूलनयात्रा समाप्त, रक्षाबन्धन। इसदिन श्रीचैतन्य महाप्रभूजी का वृन्दाबन आगमनवाला हुआ था।
अगस्त	16	शनि	श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत, भगवान श्रीश्रीराधागोविन्दजी का रात 11.30 बजे अभीषेक फिर आरती। दूसरे दिन सुबह श्रील् प्रभुपादजी के शिष्योंको केवल एक चावल खाकर व्रत को तोडना होगा।
अगस्त	17	रवि	नन्दोत्सव, श्रील् प्रभुपादजी का प्रकट दिन, श्रील् प्रभुपादजी के शिष्यों का आधा दिन उपवास फिर उत्सव।
अगस्त	19	मंगल	आजा एकादशी व्रत, दूसरे दिन पारण।
अगस्त	23	शनि	अमावस्या।
अगस्त	27	बुध	गणेश चतुर्थी, चन्द्र दर्शन निसिद्धम्। शास्त्रों के अनुसार इसदिन रातको चन्द्रमा की ओर नही देखना चाहिये।
अगस्त	31	रवि	राधाष्टमी, आधे दिन का उपवास फिर हलुआ पूडी सब्जी का भोग तथा उत्सव।
सितम्बर	03	बुध	परिवर्तिनी एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, दूसरे दिन पारण, दही छाछ स्वीकार करना शुरू, अगले तीस दिन तक दूध का त्याग।
सितम्बर	07	रवि	पूर्णिमा। इसदिन, रात्रि 09.57 बजे से 1.27 मध्यरात्रि तक चंद्रग्रहण रहेगा। इसलिये ग्रहण से 9 घण्टे पहिले मन्दिर की सारी पूजायें आज दुपहर 12.57 तक समाप्त करके मन्दिर बन्द करना होगा। भगवान को रात्रि के कपडे पहनाकर, उनको पूडी, सब्जी और गरम दूध का भोग लगाकर अंतिम आरति करके भगवान के पास और भगवान के पानी के ग्लासों में कुशा डालकर मन्दिर बन्द करके पुजारी मन्दिर को ताला लगाकर दुपहर 12.57 तक बाहर निकलना होगा। फिर दूसरेदिन सुबह गर्भगृह और मन्दिर को अच्छी तरह से धुलाई करने के बाद भोग लगाकर मंगलारति करना होगा। इसके बाद मन्दिर की सारी पूजा यथावत चलेगी।
सितम्बर	17	बुध	इन्दिरा एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, दूसरे दिन पारण।
सितम्बर	21	रवि	अमावस्या।

अक्तूबर	02	गुरु	विजयादशमी, दशहरा, श्रीपाद मध्वाचार्य जयन्ती।
अक्टूबर	03	शक्र	पापांकुशा एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, दूसरे दिन पारण, दूध पीना शुरू, अगले तीस दिनतक सभी प्रकार की दालें खाना, लौकी, बैंगन, काशीफल, काजू, बादाम आदि सभी प्रकार के द्विदल वस्तुओं का त्याग। कार्तिक नियम सेवा का आरम्भ। प्रतिदिन आकाशदीपदान एवं दामोदराष्टक ब्रजराजसुताष्टक का बाद्यों के साथ पाठ।
अक्टूबर	06	सोम	शारदीय पूर्णिमा, भगवान श्रीकृष्ण इसीदिन गोपिकाओं के साथ रासलीला किये थे। चन्द्रमा के साक्षी होने के कारण भगवान का खीरभोग चन्द्रोदय के सामने लगता है।
अक्टूबर	14	मंगल	अर्धरात्रि में राधाकुण्ड स्नान।
अक्तूबर	17	शुक्र	रमा एकादशी व्रत, दूसरे दिन पारण।
अक्टूबर	21	मंगल	अमावस्या, दीपावली, दीप आराधना के पश्चात् लक्ष्मी पूजन। सकन्द पुराण में लिखा है कि भूतविद्धा तु अमावस्या न ग्राह्या मुनिपुंगवैः विद्वान ऋषि-मुनियों ने चतुर्दशी से मिली अमावस्या को स्वीकार करने से मना किया है।
अक्टूबर	22	बुध	अन्नकूट।
अक्टूबर	25	शनि	कार्तिक शुक्ल चतुर्थी, श्रील प्रभूपादजी का तिरोभाव श्रील प्रभूपादजी के शिष्यों का आधा दिन उपवास तथा श्रील प्रभूपादजी के शिष्यों द्वारा भजन कीर्तन के साथ उत्सव।
अक्तूबर	29	बुध	गोपाष्टमी, गौपूजा
अक्टूबर	30	गुरु	अक्षय नवमी, मथुरा-वृन्दावन परिक्रमा
नवम्बर	01	शनि	इसीदिन से भीष्म पञ्चक आरम्भ।
नवम्बर	02	रवि	हरिबोधिनी एकादशी व्रत, इसदिन छिलेहुए गन्ने के टुकड़े पर रखकर दीपदान करना है। दूसरे दिन व्रत का पारण।
नवम्बर	05	बुध	कार्तिकी पूर्णिमा, इसदिन भगवान श्रीचैतन्य महाप्रभूजी वृन्दावन आये थे। दूसरे दिन कार्तिक नियम सेवा का समापन।
नवम्बर	16	रवि	उत्पन्ना एकादशी व्रत, दूसरे दिन पारण
नवम्बर	20	गुरु	अमावस्या
दिसम्बर	01	सोम	मोक्षदा एकादशी, दूसरे दिन पारण तथा इसी द्वादशी से अगले तीस दिनतक भगवान का खिचड़ी भोग लगेगा।
दिसम्बर	04	गुरु	पूर्णिमा
दिसम्बर	15	सोम	सफला एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, दूसरे दिन सुबह पारण
दिसम्बर	19	शुक्र	अमावस्या
दिसम्बर	31	बुध	पुत्रदा कादशी व्रतम् वैष्णवानाम्, दूसरे दिन व्रत का पारण, खिचड़ी भोग समाप्त।

वर्ष 2026

जनवरी	03	शनि	पूर्णिमा, अगले तीस दिन तक बेर और मूली का त्याग।
जनवरी	14	बुध	षट्तिला एकादशी व्रत, दूसरे दिन पारण।
जनवरी	18	रवि	अमावस्या।

जनवरी	23	शुक्र	वसन्त पञ्चमी, सरस्वती जन्म दिन श्री श्री राधागोविन्दजी मन्दिर (आन्ध्र प्रदेश) का पाटोत्सव, नम्बूर।
जनवरी	29	गुरु	जया एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, दूसरे दिन एक चावल खाकर पारण
जनवरी	31	शनि	नित्यानन्द त्रयोदशी आधादिन उपवास फिर उत्सव।
फरवरी	01	रवि	पूर्णिमा।
फरवरी	13	शुक्र	विजया एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, दूसरे दिन पारण।
फरवरी	16	सोम	शिवचतुर्दशी व्रतम् , एकादशी की तरह से ही इस व्रतका प्रसाद ग्रहण एवं दूसरे दिन व्रत का पारण। स्कन्द पुराण के नागरखण्ड में लिखा है कि, शिवरात्रि व्रते भूतम् कामविद्धाम् विवर्जयेत्। अर्थात् यदि शिवरात्रि त्रयोदशी तिथी से मिली है तो उसदिन वैष्णवों को उपवास नहीं रखना चाहिये किन्तु अमावस्या से मिली चतुर्दशी तिथी को उपवास के लिये स्वीकार करना चाहिये। पराशर मुनि ने भी यही बात बताई है।
फरवरी	17	मंगल	अमावस्या
फरवरी	23	सोम	श्रीवृन्दावन धाम में भगवान श्रीश्रीराधागोविन्दजी का पाटोत्सव, इस दिन भगवान श्रीश्रीराधागोविन्दजी अपने श्रीविग्ररूप से लालपत्थर मन्दिर में प्रकट हुए थे इसलिये शोभायात्रा तथा ब्रजवासियों के साथ भगवान का धूमधाम से उत्सव।
फरवरी	27	शुक्र	आमलकी एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, इसदिन से पूर्णिमा तक श्रीश्रीराधागोविन्दजी का रंगोत्सव होगा। दूसरे दिन शुबह व्रत का पारण।
मार्च	02	सोम	होली।
मार्च	03	मंगल	गौर पूर्णिमा, भगवान श्रीचैतन्य महाप्रभूजी का आविर्भाव दिन, इसदिन एकादशी की तरह से ही व्रत किया जाता है, शाम को चन्द्रोदय के पश्चात् भगवान श्रीचैतन्य महाप्रभुजी का अभिषेक। दूसरे दिन ही व्रत का पारण होगा। इसदिन भगवान श्री श्रीराधागोविन्दजी का रङ्गोत्सव समाप्त होगा। इसदिन शाम को 03.20 बजे से 06.47 तक चंद्रग्रहण रहेगा। इसलिये ग्रहण से 9 घण्टे पहिले मन्दिर की सारी पूजायें आज सुबह 06.20 तक समाप्त करके मन्दिर बन्द करना होगा। भगवान को फिर रात्रि के कपडे पहनाकर और 5 मिनट के लिये राजभोग लगाकर छोटी आरति करनी होगी। इसके बाद भगवान के पास और भगवान के पानी के ग्लासों में कुशा डालकर मन्दिर बन्द करके ताला लगाकर सुबह पुजारी को 06.20 तक बाहर निकलना होगा। फिर सायं 6.47 के बाद स्नान करके जनेऊ इत्यादि बदलकर गर्भगृह और मन्दिर को अच्छी तरह से धुलाई करके रात्री का भोग लगाकर अंतिम आरति करके भगवान को सुलाना होगा। इसके बाद मन्दिर की सारी पूजा यथावत चलेगी।
मार्च	15	रवि	पापमोचिनी एकादशी व्रत, दूसरे दिन सुबह व्रत का पारण
मार्च	19	गुरु	अमावस्या

॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीहरये नमः ॥